नाको समाचार

National AIDS Control Organisation
India's Voice against AIDS
Ministry of Health & Family Welfare, Government of India
www.naco.gov.in

जनवरी–मार्च 2017

खंड X अंक 11

Beti Bachao Beti Padhao

स्वच्छ भारत एक कदम स्वच्छता की ओर Swachh Bharat Abhiyan

Chalo Banayein Swasth Bharat

AIDS Helpline 1097

अनुक्रमणिका

कार्यक्रम

नाको की उपलब्धियाँ–जनवरी 2017 तक.....5

मार्च 2017 तक ए.आर.टी. ले रहे पी.एल.एच.आई.वी. की संख्या.....6

डी.ए.पी.सी.यू. बेंगुलरू शहर ज़िला, कर्नाटक द्वारा पोषण सहायता परियोजना.....7

भारत में ट्रक चालकों के लिए प्रथम ई.एल.एम.(नियोक्ता संचालित मॉडल) परियोजना एच.आई.वी./ एड्स हस्तक्षेप.....7

एच.आई.वी/ एड्स लोगों की अपेक्षताकृत अधिक भागीदारी (जी.आई.पी.ए.) के लिए राष्ट्रीय स्तर की क्षमता निर्माण कार्यशाला.....9

प्रचालनिक अनुसंधान, नैतिकता और आँकड़ों के विश्लेषण के संबंध में क्षमता निर्माण कार्यशाला.....10

"एन.ए.सी.पी–IV में कार्य संसार और सार्वजनिक निजी भागीदारी प्रत्युत्तर का सुदढ़ीकरण" के संबंध में दो दिन की राष्ट्रीय कार्यशाला.....11

बालचिकित्सीय एच.आई.वी./ एड्स के संबंध में चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम जारी रखना.....12

"ब्राउन बैग" संगोष्ठी श्रंखला 13

राज्य

मेघालयः लोक प्रदर्शन – रेड रिबन फवार स्टार.....14

सामाजिक और आचरण परिवर्तन संवाद के संबंध में राज्य स्तरीय प्रशिक्षण.....15

श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण और कारखाना विभाग के साथ राज्य स्तरीय बैठक.....16

कारागार निवासियों हेतु एच.आई.वी. जागरुकता परियोजना का लोकार्पण.....17

केरल में सभी राज्य संदर्भ प्रयोगशालाओं का एन.ए.बी.एल. प्रत्यायन.....18

समारोह

राष्ट्रीय युवा दिवस का उत्सव.....19

राष्ट्रीय टोल फ्री एड्स हेल्पलाइन 1097 22

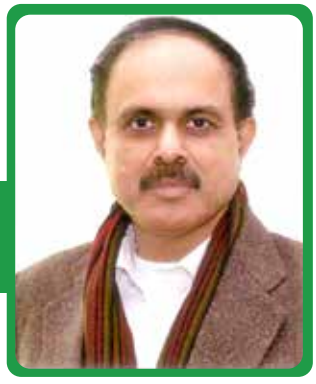

संरक्षक की कलम से

प्रिय पाठक,

जैसा कि नए वर्ष की पहली तिमाही समाप्त हो चुकी है, इसलिए वर्ष की इस तिमाही के दौरान हासिल की गई कुछ प्रमुख उपलब्धियों के बारे में आपको सूचित करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष हो रहा है। सर्वप्रथम उपलब्धि 15 मार्च 2017 को केन्द्रीय मंत्रीमंडल द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 को अनुमोदन प्रदान किया जाना है। यह नीति स्वास्थ्य की दिशा में अग्रसर होने के लिए एक बृहत एवं एकीकृत विधि से हर किसी तक पहुँचने का इरादा रखती है। इसका लक्ष्य सर्वत्र स्वास्थ्य व्याप्ति हासिल करना और किफायती लागत पर सभी के लिए उत्कृष्ट स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं सुलभ कराना है।

द्वितीय उपलब्धि 21 मार्च 2017 को राज्य सभा द्वारा एच.आई.वी./एड्स बिल पारित किया जाना है।

इस वित्त वर्ष में भारत सरकार ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण परियोजना (एन.ए.सी.पी.) हेतु 2000 करोड़ रुपये का आबंटन किया है। यह एड्स नियंत्रण परियोजना के इतिहास में अभी तक का सर्वाधिक उच्च आबंटन है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस बजट प्रावधान के साथ, "जांच और इलाज" जैसी हमारी पहलों से आरंभिक चरण में मुफ्त इलाज मुहैया कराने से उन सभी को लाभ मिलेगा जो जांच में एच.आई.वी. पॉजीटिव पाए जाते हैं।

नाको, वायरल लोड (वी.एल.) जांच परियोजना को भी बढ़ा रहा है। पहले द्वितीय पंक्ति की एंटीरेट्रोवायरल थैरेपी (ए.आर.टी.) आरंभ और प्रथम पंक्ति की विफलता का अभिनिर्धारण करने के लिए, मरीजों की लक्षित निगरानी करने हेतु वी.एल. जांच की जाती थी। अब सरकार ने ए.आर.टी. ले रहे सभी पी.एल.एच.आई.वी. की सामान्य निगरानी करने के लिए नीति में संशोधन किया है।

जैसा कि हम राज्य सरकारों, विकास भागीदारों, गैर–सरकारी संगठनों, सी.एस.ओ. और अन्य हितधारकों की सहायता के साथ इस परियोजना को नई ऊँचाइयों पर पहुँचा रहे हैं, इसलिए एच.आई.वी. संक्रमित एवं पीड़ित लोगों के लाभार्थ, अगले वित्त वर्ष में अपनी गतिविधियों की कार्यनीति बनाना समय का तकाजा है।

पढ़ने का आनंद लीजिये और अपने अनुभवों को हमारे साथ साझा करते रहिये!

डॉ. अरुण के. पांडा,
अपर सचिव एवं महानिदेशक (नाको),
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

संपादक की कलम से

प्रिय पाठक,

पिछले सूचना पत्र में, मैंने उस कार्यसूची का उल्लेख किया था जिस पर वर्ष 2017 में फोकस करना है। विशेष रूप से, चार प्रमुख मसलों पर:

1 उन तक पहुँचना जिन तक पहुँचा नहीं गया है
2 सेवा सुलभ प्रदान करने की गुणवत्ता में सुधार
3 रियल टाइम मॉनीटरिंग
4 सभी पी.एल.एच.आई.वी. के अधिकारों की रक्षा करना

अब हम निम्नलिखित कार्यसूची के बारे में चर्चा करेंगे:

1 **उन तक पहुँचना जिन तक पहुँचा नहीं गया है**–पिछले वर्ष एच.टी.सी. दिशानिर्देश अनुमोदित किए गए थे और विश्व एड्स दिवस, 2016 पर उनका विमोचन किया गया था। इनमें समुदाय आधरित जांच (सी.बी.टी.), जांच की पहुँच बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण के द्वारा स्व–जांच और अविशेषज्ञ प्रदाताओं द्वारा जांच को प्रोत्साहित करने का प्रावधान है।
देश के विभिन्न भागों में बिना समय गवाए यह शीघ्र–अतिशीघ्र आयोजित किए जाने की आवश्यकता है ताकि हम शेष एक तिहाई पी.एल.एच.आई.वी. तक पहुँचने में समर्थ हो पायें जो अपनी वस्तु–स्थिति से अनभिज्ञ हैं। अपनी वस्तु–स्थिति से अनभिज्ञ होना अत्यंत हानिकारक है क्योंकि शायद ये लोग अनजाने में संक्रमण फैला रहे हों और उपचार सेवाओं का अनुपालन नहीं कर रहे हों जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बना सकती हैं।

2 **सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता में सुधार**–नाको ने अपनी 80 एस.आर.एल. को एच.आई.वी. सीरम विज्ञान में प्रत्यातित करवा कर दूसरों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण स्थापित किया है। अन्य सभी जांच और सेवाओं के लिए गुणवत्ता अपेक्षित है ताकि इन सेवाओं का लाभ उठाने वाले लोग पूर्णतया संतुष्ट हों। एच.आई.वी. सीरम विज्ञान प्रत्यायन के लहरदार प्रभाव के कारण सी.डी.4 जांच के लिए 33 प्रयोगशालाएं और आणविक जांच के लिए 3 प्रयोगशालाएं भी पहले ही प्रत्यातित हो चुकी हैं।
मरीज की बेहतर देखभाल के लिए ए.आर.टी. केन्द्र में गुणवत्ता, ब्लड बैंकों में गुणवत्ता, ओ.एस.टी. केन्द्र पर फोकस किए जाने की आवश्यकता है।

3 **रियल टाइम मॉनीटरिंग** –रियल टाइम आधार पर निर्गत और परिणाम मुहैया कराने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध है लेकिन नाको प्रौद्योगिकी का पूरा उपयोग नहीं कर पाया है और कार्यक्षेत्र में कर्मियों को तत्काल प्रतिपुष्टि देने के लिए निगरानी तंत्रों में अभी भी अत्यधिक सुधार की आवश्यकता है।
यह रियल टाइम मॉनीटरिंग वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन तथा स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के कार्यप्रदर्शन एवं उत्पादकता के मसलों का निवारण करने में अत्यधिक सहायक सिद्ध होगी।

4 **सभी पी.एल.एच.आई.वी. के अधिकारों की रक्षा करना**–पी.एल.एच.आई.वी. द्वारा झेला जाने वाला कलंक और भेदभाव हमेशा ही एक चिंता का विषय रहा है और इस मसले का निवारण करने के लिए नाको द्वारा समय–समय पर विभिन्न दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं। लेकिन फिर भी, सिर्फ ये दिशानिर्देश पर्याप्त नहीं हैं, इसलिए नाको ने एच.आई.वी. एड्स विधेयक का अनुसरण किया ताकि इस विधेयक के उपबंध पी.एल.एच.आई.वी. के विरुद्ध कलंक और भेदभाव का न्यूनीकरण करने में सहायता करें। इस विधेयक में उनके लिए दंड का प्रावधान भी है जो पी.एल.एच.आई.वी. के विरुद्ध नफरत एवं हिंसा फैलाते हैं और शैक्षणिक, स्वास्थ्य देखभाल एवं अन्य संस्थानों में पी.एल.एच.आई.वी. के विरुद्ध भेदभाव करने के लिए आर्थिक दंड का प्रावधान भी है।

मित्रों, अब सभी भागीदारों, समुदायों और हितधारकों के लिए 2020 तक 90:90:90 और 2030 तक एड्स महामारी को समाप्त करने का लक्ष्य साकार करने हेतु नई उमंग और उत्साह के साथ कार्य करने का समय आ गया है।

डॉ. नरेश गोयल डी.डी.जी.
(एल.एस. एवं आई.ई.सी.)
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार

कार्यक्रम

नाको की उपलब्धियाँ – जनवरी 2017 तक

एच.आई.वी./एड्स का जानपदिक रोगविज्ञानी संक्षिप्त विवरण

भारत में रोकथाम सेवाएं और देखभाल, तथा सहायता और उपचार सेवाएं एड्स नियंत्रण के सभी प्रयासों की दो मुख्य स्तंभ हैं। कार्यनीति सूचना प्रबंधन और संस्थानों का सुदृढ़ीकरण करने की गतिविधियाँ राज्य और ज़िला स्तरों पर एन.ए.सी.पी. के अंतर्गत प्रमुख कार्यकलापों को क्रियान्वित करने हेतु अपेक्षित तकनीकी, प्रबंधकीय और प्रशासन सहायता उपलब्ध कराती हैं। भारत में एच.आई.वी. महामारी का प्रत्युत्तर देने के लिए, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण परियोजना (एन.ए.सी.पी.) के दिशानिर्देशों के अुनसार राज्य एड्स रोकथाम एवं नियंत्रण सोसायटियों की स्थापना की गई थी। 2015 के एच.आई.वी. अनुमानों के अनुसार, भारत में वयस्क एच.आई.वी. व्याप्ति लगभग 0.26 प्रतिशत थी। एच.आई.वी./एड्स के साथ जीवन जीने वाले लोगों (पी.एल.एच.ए.) की संख्या 21.17 लाख थी। 2014 में लगभग 86 हजार वार्षिक नए एच.आई.वी. संक्रमणों का अनुमान था। यह नए संक्रमणों में वर्ष 2000 की तुलना में 66 प्रतिशत और एन.ए.सी.पी.–IV के लिए आधार वर्ष 2007 की तुलना में 32 प्रतिशत की गिरावट है। कुल नए संक्रमणों का 12 प्रतिशत बच्चों (15 वर्ष से कम आयु के) के कारण था। देश में एड्स–संबंधित हेतुकों के कारण मृत्यु की अनुमानित संख्या 67.6 हजार थी।

उपलब्धियाँ (जनवरी 2017 तक)

- राष्ट्रीय प्रोटोकॉल के अनुसार, वित्त वर्ष 2016–17 के लिए 90 लाख के लक्ष्य की तुलना में लगभग 85.61 लाख एस.टी.आई./आर.टी.आई. रोगियों की उपचार किया गया।
- नाको से सहायता–प्राप्त ब्लड बैंकों ने 1,126 ब्लड बैंकों के माध्यम से 65.01 लाख यूनिटों का संग्रहण किया, जिसमें 78 प्रतिशत यूनिट रक्त का संग्रहण स्वैच्छिक रक्तदान के माध्यम से किया गया था।
- लगभग 184.8 लाख सामान्य क्लायंटों और 161.2 लाख गर्भवती महिलाओं की एच.आई.वी. के लिए जांच की गई। लगभग 87.3 प्रतिशत माताओं का जीवनकालिक ए.आर.टी. और शिशुओं का ए.आर.वी. प्रोफाइलैक्सिस (माता–शिशु जोड़ी) शुरु किया गया।
- वित्त वर्ष 2016–17 हेतु 17 लाख के लक्ष्य की तुलना में, लगभग 23.5 लाख एच.आई.वी.–टी.बी. क्रॉस रेफरल हुए।
- ए.आर.टी. ले रहे पी.एल.एच.आई.वी. की संचयी संख्या 10.5 लाख है, जिनका पूरे देश में 530 ए.आर.टी. सेन्टर, 1108 लिंक ए.आर.टी. सेन्टर और 350 सी.एस.सी. के माध्यम से उपचार किया जा रहा है। इस वित्त वर्ष के दौरान, 5 ए.आर.टी. सेन्टर के लक्ष्य की तुलना में पांच नए ए.आर.टी. सेन्टर स्थापित किए गए और लगभग 5.34 लाख समयानुवर्ती संक्रमणों का इलाज किया गया।
- इस समय, वहां कुल 1503 उच्च जोखिम समूह और सेतु आबादी फोकसशुदा लक्षित हस्तक्षेप हैं, जो एक नियत भौगोलिक क्षेत्र में गैर–सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) और समुदाय–आधारित सगंठनों (सी.बी.ओ.) द्वारा क्रियान्वित की जा रही हैं।
- मास मीडिया (टी.वी./रेडियो) पर तीन अभियानों का लोकार्पण किया गया और कालेजों में 112 नए रेड रिबन क्लबों का गठन किया गया।
- मुख्यधारा में शामिल करने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत, 3.0 लाख की तुलना में लगभग 3.31 लाख लोगों को प्रशिक्षित किया गया।
- कंडोम के मुफ्त वितरण की योजना के अंतर्गत 36.6 करोड़ कंडोम की लक्ष्य की तुलना में लगभग 20.58 लाख करोड़ कंडोम बाँटे गए।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण परियोजना– चरण IV, वित्त वर्ष 2016–17 के अंतर्गत वास्तविक लक्ष्य और उपलब्धियाँ

क्र.सं.	सूचक	2016.17	
		लक्ष्य	उपलब्धि
1	राष्ट्रीय प्रोटोकॉल के अनुसार उपचारित एस.टी.आई./आर.टी.आई. मरीज	90 लाख	85.61 लाख
2	नाको से सहायता–प्राप्त ब्लड बैंकों में रक्त संग्रहण	55 लाख	65.01 लाख
3	नाको से सहायता–प्राप्त ब्लड बैंकों में स्वैच्छिक रक्तदान द्वारा संग्रहित रक्त यूनिटों का अनुपात	80%	78%
4	एच.आई.वी. के लिए जांच किए गए क्लायंट (सामान्य क्लायंट)	140 लाख	184.8 लाख
5	एच.आई.वी. के लिए जांच की गई गर्भवती महिलाएं	140 लाख	161.2 लाख
6	जीवनकालिक ए.आर.टी. शुरु की गई माताओं और ए.आर.वी. प्रोफाइलैक्सिस (माता शिशु जोड़ी) का प्रतिशत	90%	87.3%
7	एच.आई.वी.–टी.बी. क्रॉस रेफरल	17 लाख	23.5 लाख
8	स्थापित नए ए.आर.टी. सेन्टर	5	5
9	ए.आर.टी. पर पी.एल.एच.आई.वी. (संचयी)	10.5 लाख	10.5 लाख
10	उपचारित समयानुवर्ती संक्रमण	3 लाख	5.34 लाख
11	मास मीडिया – टी.वी./रेडियो पर लोकार्पित अभियान	3	3
12	कालेजों में गठित नए रेड रिबन क्लब	100	112
13	मुख्यधारा में शामिल करने के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रशिक्षित व्यक्ति	3 लाख	3.31 लाख
14	कंडोम का मुफ्त वितरण	36.6 करोड़ पैकेटों	20.58 करोड़ पैकेटों

श्री पदम नारायण,
आँकड़ा विश्लेषण एवं प्रचार इकाई,
एस.आई.एम.यू.

मार्च 2017 तक ए.आर.टी. ले रहे पी.एल.एच.आई.वी. की संख्या

ए.आर.टी. सेन्टर की संख्या	531
लिंक ए.आर.टी. सेन्टर की संख्या	1108
सी.एस.सी. की संख्या	360
ए.आर.टी. ले रहे पी.एल.एच.आई.वी. (मार्च 2017 तक)	10,50,326

डी.ए.पी.सी.यू. बेंगलुरू शहर ज़िला, कर्नाटक द्वारा पोषण सहायता परियोजना

23 जनवरी 2017 को ज़िला एड्स रोकथाम एवं नियंत्रण यूनिट (डी.ए.पी.सी.यू.) बेंगलुरू शहर, कर्नाटक और लॉयन्स क्लब 317 एफ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक कार्यक्रम में बेंगलुरू की लॉयन्स क्लब 317 एफ शाखा द्वारा एच.आई.वी./एड्स के साथ जीवन बिताने वाले सैकड़ों लोगों (पी.एल.एच.आई.वी.) को पोषण सहायता प्रदान की गई।

पी.एल.एच.आई.वी. का चयन बच्चों वाले परिवारों, एच.आई.वी./टी.बी. सह–संक्रमण के मामलों और गर्भवती महिलाओं के आधार पर किया गया था। प्रत्येक पी.एल.एच.आई.वी. को एक बैग दिया गया जिसमें प्रोटीन पाउडर, मूँगफली, मसूर की दाल, गुड़, तेल, चावल और मूँग दाल मौजूद थी।

डॉ. आशा टी.एच., डी.ए.पी.सी.यू. प्रभारी ने कर्नाटक में पी.एल.एच.आई.वी. को पोषण बैग सौंपा

डी.ए.पी.सी.यू. ने लॉयन्स क्लब को पी.एल.एच.आई.वी. नेटवर्क द्वारा तैयार किया गया प्रोटीन खरीदने के लिए प्रेरित किया। ज़िला तपेदिक अधिकारी ने पोषण और अच्छे स्वास्थ्य के महत्त्व का विशेष उल्लेख किया। आगे उन्होंने उल्लेख किया कि पी.एल.एच.आई.वी. में टी.बी. आम है और किसी भी खांसी या बुखार को अनदेखा नहीं किया जा सकता है तथा अच्छा पोषण पी.एल.एच.आई.वी. की प्रतिरक्षा में सुधार लाने के लिए अनिवार्य है। डॉ. आशा टी.एच., डी.ए.पी.सी.यू. प्रभारी ने ए.आर.टी. इलाज एवं अनुपालन संबंधी मसलों, सामाजिक लाभ योजनाओं और पौष्टिक भोजन एवं जीवनशैली में परिवर्तन एवं जीवन के प्रति सकारात्मक सोच के महत्त्व के बारे में विशेष उल्लेख किया।

उद्घाटन में डॉ. आशा, टी.एच. डी.ए.पी.सी.यू. प्रभारी, डॉ. श्री निवास जी., ए.डी.टी.ओ, डॉ. ममता, एम.एस., परिवार कल्याण अधिकारी, श्री बी. मोहन, लॉयन्स गवर्नर, श्री रामकृष्ण रेड्डी, श्री बी. जयचन्द्र, लॉयन प्रेजीडेंट, श्रीमती यशोदा, ज़िला पर्यवेक्षक और श्री हनुमंतराय, प्रभारी ज़िला पर्यवेक्षक उपस्थित थे।

डॉ. गोविन्द बंसल, डी.एन.आर.टी., नाको

भारत में ट्रक चालकों के लिए प्रथम ई.एल.एम.(नियोक्ता संचालित मॉडल) परियोजना वेदांता लिमिटेड, झारसुगुडा, ओडिशा द्वारा एच.आई.वी./एड्स हस्तक्षेप

एच.आई.वी. एवं एड्स के संबंध में जागरुकता कार्यक्रम

पूरे संसार में औद्योगिक गलियारों और समीपस्थ समुदायों में एच.आ. ई.वी./एड्स की शक्ति एवं बढ़ता हुआ प्रभाव अविवादित है। एच.आ. ई.वी./एड्स का प्रगाढ़ मानवीय, सामाजिक, आर्थिक और विकासात्मक प्रभाव पड़ता है। जागृति परियोजना, जो वेदांता लिमिटेड, झारसुगुडा की एक ई.एल.एम. परियोजना है, भारत में किसी भी कारपोरेट द्वारा एक अनूठा हस्तक्षेप है और एक अनुकरणीय घटना अध्ययन है जो एच.आई.वी./एड्स के विरुद्ध वैश्विक संघर्ष में एक उल्लेखनीय अंतर पैदा कर सकता है। ओडिशा स्थित झारसुगुडा में वेदांता का विशाल प्रतिष्ठान मौजूद है जो लगभग 4000 एकड़ जमीन पर फैला हुआ संसार का एक सबसे बड़ा अलुमिनियम विद्युतशक्ति परिसर है। यह विनिर्माण उद्योग प्रतिष्ठान सैकड़ों आगंतुकों को आकर्षित करता है जिनमें विस्तृत श्रेणी के हितधारक, ट्रक

चालकों, प्रवासी मजदूर और रोजाना दिहाड़ी पर काम करने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कर्मचारी शामिल हैं। इस भीड़ के साथ, प्रवासी मजदूर और ट्रकर कर्मचारियों की एक काफी बड़ी आबादी इसका एक बड़ा हिस्सा होने के नाते, एच.आई.वी./एड्स के विरुद्ध संघर्ष में एक दीर्घकालिक एवं व्यावहारिक मॉडल पर उनके लिए समान रूप से कार्य करना एक चिंता, चुनौती और अवसर था।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) द्वारा जारी किए गए ई.एल.एम. मॉडल ने वेदांता के लिए एच.आई.वी./एड्स की व्यापकता एवं घटना की रोकथाम करने हेतु एच.आई.वी./एड्स के संबंध में ट्रक चालकों के लिए एक दीर्घकालिक, सुव्यवस्थित एवं प्रतिबद्ध परियोजना संचालित करने के वास्ते सही मंच उपलब्ध कराया। इसकी दीर्घकालिकता नीति को सुमेलित करते हुए और एच.आई.वी./एड्स नीति के क्रियान्वयन की दिशा में एक अतिरिक्त प्रतिबद्धता के साथ, कार्यस्थल पर एच.आई.वी./एड्स की रोकथाम हेतु "नियोक्ता संचालित मॉडल" के संबंध में, दिनांक 13 अगस्त 2015 को भुवनेश्वर में ओडिशा राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी (ओ.एस.ए.सी.एस.) के परियोजना निदेशक के माध्यम से वेदांता लिमिटेड, झारसुगुडा और नाको, स्वास्थ्य विभाग के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस प्रकार, वेदांता लिमिटेड और ओ.एस.ए.सी.एस. नेगहन एच.आई.वी./एड्स रोकथाम कार्यक्रम के संबंध में वेदांता के साथ जुड़े अनौपचारिक कामगारों तक पहुँचने के लिए एक नियोक्ता संचालित मॉडल (ई.एल.एम.) तैयार एवं क्रियान्वित करने हेतु सहयोग करने के लिए भागीदारी है।

दीर्घकालिक जागरुकता सत्रों के संचालन हेतु वेदांता का सुस्थापित ट्रकर्स रिक्रीएशनल रूम एक सक्रिय स्वैच्छिक परामर्श एवं जांच केन्द्र (वी.सी.टी.सी.) के लिए पहले से ही एक रेलिंग प्वाइंट माना जाता है। निर्धारित आवधिक स्वास्थ्य जांच शिविर, मामूली बीमारियों की त्वरित जांच, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) द्वारा जारी किए गए ई.एल.एम. मॉडल ने वेदांता के लिए एच.आई.वी./एड्स की व्यापकता एवं घटना की रोकथाम करने हेतु एच.आई.वी./एड्स के संबंध में ट्रक चालकों के लिए एक दीर्घकालिक, सुव्यवस्थित एवं प्रतिबद्ध परियोजना संचालित करने के वास्ते सही मंच उपलब्ध कराया।

निर्धारित आवधिक स्वास्थ्य जांच शिविर, मामूली बीमारियों की त्वरित जांच, मुफ्त निदान एवं दवाएं ट्रक कर्मचारियों के लिए वेदांता की सचल स्वास्थ्य इकाई, इस परियोजना की सफलता की दिशा में सर्वश्रेष्ठ कुँजी साबित हुई है। संयंत्र परिसरों के प्रमुख स्थलों, जैसे ट्रकर्स रिक्रीएशनल रूम, पार्किंग क्षेत्रों, कैंटीनों में एच.आई.वी./एड्स संबंधी संवाद की प्रत्येक व्यवस्था है। इन संवेदीकरण अभियानों के माध्यम से 2000 से अधिक ट्रक कर्मचारियों तक सीधे पहुँचा गया है, जबकि आई.ई.सी. सामग्रियों और रोड–शो के माध्यम से 8000 ट्रक कर्मचारियों को स्पर्श किया गया है। विश्व एड्स दिवस उत्सव एच.आई.वी./एड्स के बारे में जागरुकता का प्रसार करने हेतु परिदृष्टि को सुमेलित करने के साथ प्रतिबद्धता के एक अन्य दिन के रूप में मनाया गया। जहाँ कहीं संभव था, वहाँ इन कार्यक्रमों का प्रवासी मजदूरों, समुदाय और प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कर्मचारियों, स्कूल के बच्चों, कर्मचारियों के परिवारों और समुदायों के लिए भी विस्तार किया गया।

वेदांता लिमिटेड, झारसुगुडा, नाको और ओ.एस.ए.सी.एस. के इस संयुक्त प्रयास ने एक बृहत एवं प्रतिबद्ध परिदृष्टि के साथ सफलता की झंडी दिखाई है और एच.आई.वी./एड्स रोकथाम परियोजना के आगे मौजूद परिधि को परिष्कृत किया है। आगे अग्रसर होने की दिशा में, ट्रक कर्मचारियों के लिए एच.आई.वी./एड्स हस्तक्षेप का यह ई.एल.एम. मॉडल एक अनूठा और सफल मॉडल सिद्ध होगा।

डॉ. के. मदन गोपाल,
एन.एम.यू. समन्वयक, टी.आई. संभाग

एच.आई.वी./एड्स प्रभावित लोगों की अपेक्षाकृत अधिक भागीदारी (जी.आई.पी.ए.) हेतु राष्ट्र स्तरीय क्षमता निर्माण कार्यशाला

पटना, बिहार में जी.आई.पी.ए. समन्वयकों के लिए राष्ट्र स्तरीय क्षमता निर्माण कार्यशाला में प्रतिभागी

16 एवं 17 मार्च 2017 को पटना, बिहार में नाको ने बिहार राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी (बी.एस.ए.सी.एस.) और कर्नाटक हेल्थ प्रमोशन ट्रस्ट (के.एच.पी.टी.) के सहयोग से जी.आई.पी.ए. समन्वयकों के लिए एक राष्ट्र स्तरीय क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में अन्य सरकारी विभागों के साथ संबन्धों को मजबूत बनाने तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की उपलब्धता, ए.आर.टी. अनुपालन को बढ़ावा देना, सकारात्मक रोकथाम और पी.एल.एच.आई.वी. की सकारात्मक रोकथाम एवं यौन/प्रजनन स्वास्थ्य को बढ़ावा देना सुनिश्चित करने के लिए राज्य स्तरीय नेटवर्कों और ज़िला स्तरीय नेटवर्कों में जी.आई.पी.ए. समन्वयकों की सुदृढ़ एसोसिएशन का निर्माण करने पर फोकस किया गया था। इस कार्यशाला में जी.आई.पी.ए. समन्वयकों/ए.डी.–जी.आई.पी.ए./प्रभारी अधिकारी, क्षेत्रीय संवाद अधिकारी (आई.ई.सी. एवं एम.एस.), एन.सी.पी.आई.+ और पूरे देश में विहान परियोजना क्रियान्वित करने वाले भागीदारों ने भाग लिया।

जी.आई.पी.ए. अन्य संभागों के सहयोग से सभी पी.एल.एच.आई.वी. के लिए देखभाल सहायता एवं उपचार सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु सहायता करता है तथा एस.ए.सी.एस. और नाको के मंचों/समितियों के द्वारा परियोजनाओं एवं नीतिगत निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रियतापूर्वक अंशदान कर रहा है।

डॉ. राजेश राणा, राष्ट्रीय परामर्शदाता (आई.ई.सी. एवं एम.एस.), नाको ने उल्लेख किया कि हमें 90:90:90 से आगे 100:100:100 का कदम उठाने के लिए कार्यसाधक ढंग से कार्य करना चाहिए। जी.आई.पी.ए. को परियोजना के सभी संघटकों में सम्मिलित किया जाना चाहिए और इस कार्यशाला के परिणामों से ए.डी. (जी.आई.पी.ए.) के विनिर्दिष्ट कार्यों एवं उत्तरदायित्वों तथा राज्यों में जी.आई.पी.ए. के क्रियान्वयन हेतु स्पष्ट वर्णन होना चाहिए।

डॉ. नरेश गोयल, डी.डी.जी. (आई.ई.सी.), नाको के अनुसार, एस.डी.जी. ने 2030 तक एड्स महामारी का उन्मूलन करने का लक्ष्य रखा है और तदनुसार, हमने 2020 तक 90:90:90, 2025 तक 95:95:95 और 2030 तक 100:100:100 का लक्ष्य निर्धारित किया है। आगे उन्होंने उल्लेख किया कि ए.डी. (जी.आ.ई.पी.ए.) की क्षमता और नागरिक समाज संगठन में जी.आई.पी.ए. की भागीदारी को बढ़ाना अत्यधिक जरूरी है जो कलंक एवं भेदभाव का न्यूनीकरण करने में अत्यधिक कारगर सिद्ध होगा। डॉ. गोयल ने इन बातों पर भी बल दिया कि (i) पी.एल.एच.आई.वी. और पी.एल.एच.आई.वी. नेटवर्कों को एस.ए.सी.एस. की कार्यकारी एवं शासी समितियों में एक सदस्य के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए; (ii) कलंक एवं भेदभाव के मसले रिपोर्ट करने एवं सुलझाए जाने के लिए ऑनलाइन प्रणाली तैयार की जानी चाहिए; (iii) सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के उद्ग्रहण की रिपोर्टिंग हेतु सॉफ्टवेयर तैयार किया जाना चाहिए; और (iv) एस.ए.सी.एस., विहान के साथ मिलकर संयुक्त परियोजनाओं की योजना बना सकती है।

श्री शशि भूषण कुमार, परियोजना निदेशक, बी.एस.ए.सी.एस. ने उल्लेख किया कि बिहार एस.ए.सी.एस., एच.आई.वी. के साथ जीवन बिताने वाले लोगों की समस्याओं पर उच्चतम स्तर पर कार्रवाई कर रही है और पी.एल.एच.आई.वी. के लिए सभी योजनागत लाभ 1 अप्रैल 2017 से उनके खातों में ऑनलाइन अंतरित होंगे।

श्री रवि, आई.ई.सी. एवं एम.एस.

प्रचालनिक अनुसंधान, नैतिकता और आँकड़ों के विश्लेषण के संबंध में क्षमता निर्माण कार्यशाला

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण परियोजना (एन.ए.सी.पी.) के अंतर्गत अनुसंधान एवं मूल्याँकन, कार्यनीति सूचना प्रबंधन का एक अत्यावश्यक घटक है। नाको अनुसंधान के परिणामों का परियोजनाबद्ध कार्रवाई और नीति निर्माण में रूपांतरण करने पर फोकस करता है। नाको में अनुसंधान एवं मूल्याँकन संभाग के अंतर्गत प्रचालनिक अनुसंधान एवं नैतिकता कार्यशालाओं के माध्यम से परियोजना प्रबंधकों, अनुसंधानकर्ताओं और युवा वैज्ञानिकों की क्षमता का निर्माण करना एक कार्यसूची है। इस कार्यशाला का उद्देश्य अनुसंधान प्रोटोकॉल तैयार करने की और अनुंसधान एवं मूल्याँकन का साक्ष्य–आधारित कार्यक्रमों एवं नीतियों में संश्लेषण करने की क्षमता का निर्माण करना है। अनुंसधान एवं मूल्याँकन, नाको ने **30 जनवरी – 2 फरवरी 2017** को **दिल्ली** में सी.डी.सी. और डब्ल्यू.एच.ओ. के सहयोग से **प्रचालनिक अनुसंधान, नैतिकता और आँकड़ों का विश्लेषण संबंधी क्षमता निर्माण कार्यशाला** का आयोजन किया।

डॉ. अरुण के. पाण्डा, अपर सचिव एवं महानिदेशक, नाको, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय उद्घाटन सत्र के दौरान प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

दिल्ली में प्रचालनिक अनुसंधान, नैतिकता और आँकड़ों का विश्लेषण संबंधी क्षमता निर्माण कार्यशाला में प्रतिभागीगण

इस कार्यशाला में एच.आई.वी./एड्स अनुसंधान के संबंध में कार्यरत विभिन्न प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों एवं संगठनों से कुल 40 प्रतिभागियों तथा राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटियों से परियोजना प्रबंधकों ने भाग लिया। एन.ए.आर.आई., जनसंख्या परिषद, आई.सी.आर. डब्ल्यू, एन.आ.ई.एम.एस., एफ.एच.आई, डब्ल्यू.एच.ओ., सी.डी.सी. आदि से प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया और परामर्श दिया।

प्रशिक्षण का उल्लेखनीय भाग सामूहिक कार्य के रूप में आयोजित किए जाने के साथ **'करके सीखना'** की अनूठी विधि को अपनाया गया। कार्यशाला में पूर्वाह्न में संवादात्मक तकनीकी सत्रों का आयोजन करने और अपराह्न सत्र में **गाइडेंस मेंटर्स के अंतर्गत अनुसंधान प्रोटोकॉल तैयार करने** की अनूठी विधि को अपनाया गया। इस कार्यशाला के माध्यम से परियोजना के अंतर्गत **साक्ष्य जुटाने के लिए मुख्य वरीय अनुसंधान क्षेत्रों** अर्थात एल.एफ.यू., अनुपालन, नये एच.आई.वी मामलों का पता लगाने हेतु नई कार्यनीतियाँ आदि के आधार पर छह अनुसंधान प्रस्ताव तैयार किए गए। कार्यशाला से उत्पन्न सभी छह प्रोटोकॉलों का वित्तपोषण इस परियोजना के अंतर्गत किया जाएगा।

सुश्री विनिता वर्मा, अनुसंधान एवं मूल्याँकन

"एन.ए.सी.पी–IV में कार्य संसार और सार्वजनिक निजी भागीदारी प्रत्युत्तर का सुदृढ़ीकरण" के संबंध में दो दिन की राष्ट्रीय कार्यशाला

16–17 फरवरी 2017 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा इंटरनेशनल लेबर ऑरग्नाइजेशन के सहयोग से 'भारत में राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण परियोजना (एन.ए.सी.पी.) में कार्य संसार और सार्वजनिक निजी भागीदारी प्रत्युत्तर का सुदृढ़ीकरण' के संबंध में कार्यशाला का आयोजन किया गया।

एच.आई.वी. के प्रत्युत्तर में कार्य संसार का सुदृढ़ीकरण करना और सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के उद्योगों से सहायता जुटाना एन.ए.सी.पी. का एक महत्त्वपूर्ण भाग है।इस कार्यशाला ने 'एन.ए.सी.पी. IV में कार्य संसार और सार्वजनिक निजी भागीदारी का सुदृढ़ीकरण' करने के लिए नाको के प्रयासों की पूर्ति की। आई.एल.ओ. ने बहुक्षेत्रक प्रत्युत्तरों का सुदृढ़ीकरण करने हेतु मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई। इस दो दिन की राष्ट्रीय कार्यशाला में आई.ई.सी. संभाग के अधिकारियों, एस.ए.सी.एस. के क्षेत्रीय संवाद अधिकारियों (आई.ई.सी. एवं एम.एस.), नाको एवं आई.एल.ओ. के अधिकारियों, विभिन्न समावेश मंत्रालयों/विभागों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सुश्री शौना ऑलने, चीफ, जी.ई.डी. एंड आई.एल.ओ. ने अपने भाषण में उल्लेख किया कि कामगारों के एच.आई.वी./एड्स जांच के आँकड़ों का विश्लेषण करना एक अच्छा अनुभव रहा है। इस दिशा में भारत में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। आई.एल.ओ. एच.आई.वी की जाँच करने का विस्तार करने में चुनौतियों को देख रहा है और सार्वजनिक निजी भागीदारी (पी.पी.पी.) के लिए संभावित क्षेत्रों को तलाश रहा है। एड्स समाप्त नहीं हुई है। वहाँ असाधारण प्रगति हुई है लेकिन अभी भी काफी दूरी तय करनी है। अब एक नाजुक समय है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि आई.एल.ओ. शून्य भेदभाव सुनिश्चित करने हेतु कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है। एड्स प्रत्युत्तर का जेंडर प्रत्युत्तरशील होना अनिव. र्य है। 2015 में, हर सप्ताह में 7,500 नई महिलाएं एच.आई.वी. से संक्रमित हुई हैं। महिलाओं को हिंसा का सामना करना पड़ता है और इसलिए एच.आई.वी. के प्रति सुग्राही हैं। आगे उन्होंने कहा कि 90 – 90 – 90 के लक्ष्य महत्त्वपूर्ण हैं और हमें भारत में वी.सी.टी. का सुदृढ़ी. करण करने के लिए अपने प्रयासों को केन्द्रित करना होगा।

श्री एस.एम. जाफर, वरिष्ठ तकनीकी विशेषज्ञ, आई.एल.ओ, जेनेवा ने उन विधियों पर चर्चा की अध्यक्षता की जो एच.आई.वी./एड्स और संवाद की भूमिका के संबंध में उद्योगजगत को एकजुट करने में कामयाब हुई हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को सूचित किया कि दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सवांद को ध्यान आकर्षित करना चाहिए। उन्होंने इन मुख्य संदेशों कि एच.आई.वी. 15–49 वर्ष के आयु वर्ग को प्रभावित करता है जो अपनी जीवन की परम अवस्था में होते और अपनी जनशक्ति का हिस्सा होते हैं, एच.आई.वी. की रोकथाम की जा सकती है, कार्यवाही आह्वान, अच्छी संवाद सामग्री तैयार करने के चरणों से संबंधित बातों पर बल दिया।

अपने उद्घाटन भाषण में, डॉ. अरुण के. पांडा, अपर सचिव एवं महानिदेशक, नाको ने उल्लेख किया कि भारत में लोग स्वास्थ्य तलाशने का बर्ताव प्रदर्शित नहीं करते हैं और एच.आई.वी./एड्स के बारे में भी यह प्रवृत्ति वैसी ही है जहाँ अनेक लोगों को अपनी एच.आई.वी. वस्तुस्थिति का पता नहीं है। उन्होंने बल दिया कि हमें लोगों को उनके स्वास्थ्य की वस्तुस्थिति ज्ञात करने हेतु जाँच करवाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अक्सर लोगों को सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध योजनाओं और सुविधाओं की जानकारी नहीं होती है।

उन्होंने विशेष तौर पर उल्लेख किया कि कलंक एक बहुत बड़ा कारण है जो एच.आई.वी. जाँच करवाने के आड़े आता है। हमें यह स्पष्ट संदेश देने के लिए कि एच.आई.वी. जाँच करवाना कामगारों और कंपनियों के हित में है, यूनियनों और नियोक्ता संगठनों को अनिवार्यतः शामिल करना होगा। उन्होंने जाँच करवाने के महत्त्व के संबंध में संदेशों के रूप में लक्षित संवाद की आवश्यकता पर भी बल दिया जो निजी क्षेत्र के साथ सहयोग का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र भी है। उन्होंने जेंडर आधारित हिंसा की समस्या के बारे में भी अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने प्रबलतापूर्वक महसूस करते हुए कहा कि महिला समूह, विशेषकर स्वसहायता समूह समाज की इस बुनाई का न्यूनीकरण करने में एक अहम भूमिका निभा सकते हैं।

डॉ. अरुण के. पाण्डा, अपर सचिव एवं महानिदेशक, नाको प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

फास्ट ट्रेक वी.सी.टी. /वर्क – दो दिन की कार्यशाला के दौरान प्रतिभागी

प्रमुख अनुशंसाएं
■ कार्य संसार के संघटक का सुदृढ़ीकरण हेतु आई.एल.ओ., नाको और संबंधित राज्य श्रमिक विभागों द्वारा संयुक्त रूप से क्षेत्रीय कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए। VCT@Work को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के संभावित उद्यम भी इस कार्यशाला में भाग ले सकते हैं।
■ मुफ्त एवं गुप्त उपचार और जाँच के संदेश के लक्षित संवाद हेतु प्रयासों को बड़े हितधारकों के बीच फोकसशुदा बनाया जाए।
■ एच.आई.वी./एड्स के संबंध में कार्यरत संगठनों के बीच वरीयतः एच.आई.वी. के प्रत्युत्तर के संबंध में कार्य संसार के बारे में अच्छी पद्धतियों के सार्थक आदान–प्रदान और ज्ञान की साझेदारी हेतु मंच।
■ अधिक आई.ई.सी. सामग्री की आवश्यकता है जो इस पर फोक करती हो कि क्यों व्यक्ति को जाँच करवानी चाहिए।
■ केन्द्रीय कामगार शिक्षा बोर्ड (सी.बी.डब्ल्यू.ई.) और संबंधित एस.ए.सी.एस. के बीच कार्य योजनाओं का वरीयता के आधार पर आदान–प्रदान किया जाना चाहिए। वहाँ दोनों विभागों के उच्चाधिकारियों के बीच भी संवाद होना चाहिए।
■ आई.एल.ओ. और नियोक्ता संगठनों को उच्चतम स्तर पर इस बारे में प्रणबद्धता का सृजन करना चाहिए कि एच.आई.वी./एड्स में अपने सी.एस.आर. संसाधनों को कैसे इस्तेमाल किया जाए।

श्री आशिश वर्मा, आई.ई.सी. एवं एम.एस.

बालचिकित्सीय एच.आई.वी./एड्स के संबंध में चिकित्सीय शिक्षा कार्यक्रम जारी रखना

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने अपने नए दिशानिर्देशों (2013)* के माध्यम से यथासंभव शीघ्र–अतिशीघ्र बच्चों तक पहुँचने की आवश्यकता पर बल दिया है, और एच.आई.वी. के साथ जीवन बिताने वाले पांच वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों के लिए ए.आर.टी. शुरु किए जाने की अनुशंसा की है। पूरे विश्व में संक्रामक रोग से मृत्यु के लिए एच.आई.वी. शीर्ष और टी.बी द्वितीय प्रमुख कारण है। डब्ल्यू.एच.ओ. का यह भी अनुमान है कि मध्यम से उच्च व्याप्ति वाले देशों में टी.बी से पीड़ित बच्चों में एच.आई.वी. की व्याप्ति 10% से 60% के बीच है।

5 फरवरी 2017 को पीडियाट्रिक सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस फॉर एच.आई.वी. केयर, एल.टी.एम.एम.सी. एवं एल.टी.एम.जी.एच, सियॉन, मुंबई के सहयोग से कर्नाटक हेल्थ प्रमोशन ट्रस्ट (के.एच.पी.टी.) ने सियॉन अस्पताल, मुंबई, महाराष्ट्र में बालचिकित्सीय एच.आई.वी./एड्स के संबंध में चिकित्सीय शिक्षा कार्यक्रम जारी रखना (सी.एम.ई.) का आयोजन किया। बालचिकित्सीय टी.बी एवं एच.आई.वी., और इसके उपचार पर फोकस करते हुए बालचिकित्सकों के लिए उनके संबंधित परिवेश में बालचिकित्सीय एच.आई.वी. एवं टी.बी मामलों का बेहतर उपचार करने हेतु एक सी.एम.ई. कार्यशाला का आयोजन किया गया।

* विश्व स्वास्थ्य संगठनः एच.आई.वी. के इलाज एवं रोकथाम हेतु एंटीरेट्रोवायरल दवाओं के उपयोग के संबंध में समेकित दिशानिर्देशः एक सार्वजनिक स्वास्थ्य विधि हेतु सिफारिशें। जून, 2013।

सियॉन अस्पताल, मुंबई में सी.एम.ई. कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी

उद्देश्यः चिकित्सकों को निम्न के बारे में अभिमुख करना, सी.एल.एच.आई.वी. मामलों का शीघ्र निदान एवं उपचार, बच्चों में ओ.आई. का उपचार, ए.आर.टी. के अनुषंगी प्रभावों का अभिनिर्धारण एवं उपचार, वृद्धि निगरानी और टीकाकरण सेवाएं उपलब्ध कराना।

कार्यशाला का परिणामः चिकित्सा व्यवसायी शीघ्र निदान करने, तीव्रतापूर्वक रेफर करने और एच.आई.वी. अरक्षित बच्चों के जीवन की गुणवत्ता का संवर्धन करने में समर्थ हैं। कुल 60 चिकित्सकों ने सी.एम.ई. में भाग लिया।

श्री रवि, आई.ई.सी. एवं एम.एस.

"ब्राउन बैग" संगोष्ठी श्रंखला

2016–17 में अनुसंधान एवं मूल्यांकन संभाग के अंतर्गत क्षमता निर्माण पहलों के एक भाग के रूप में, एक नई पहल, ब्राउन बैग संगोष्ठी श्रृंखला आरंभ की गई। इस संगोष्ठी श्रृंखला का लक्ष्य सूचना देना तथा नाको में परियोजना प्रबंधकों, समुदाय, विकास भागीदारों और मुख्य हितधारकों की क्षमताओं एवं ज्ञान का निर्माण करना है। यह संगोष्ठी श्रृंखला ज्ञान के आदान–प्रदान, खुली वार्ता, नई प्रगतियों के संबंध में प्रति–विद्या प्राप्ति और परियोजना प्रबंधन के लिए एक प्रवेशद्वार के रूप में सेवा प्रदान करती है।

परस्पर–सांस्थानिक सहयोग और क्षमता निर्माण की भावना का अनुसरण करते हुए, अनेक वार्ताओं का आयोजन किया गया जिनका फोकस एच.आई.वी./एड्स अनुसंधान में नई प्रगतियाँ था। नवंबर, 2016 में डॉ. निरंजन सग्गूर्ति, जनसंख्या परिषद द्वारा एक वार्ता, **"पदार्थ उपयोग एवं उपचार अनुपालन–समस्याएं और कार्यनीतियाँ"** के साथ संगोष्ठी श्रृंखला का शुभारंभ हुआ।

डॉ. अरुण के. पाण्डा, अपर सचिव, नाको, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ब्राउन बैग संगोष्ठी में भाग लेते हुए

इस वार्ता में नाको, एम.एस.ए.सी.एस. और एम.डी.सी.एस. की भागीदारी के साथ क्रियान्वित की गई अल्कोहल उपयोग और उपचार अनुपालन के संबंध में एच.आई.एच. वित्तपोषित सतत हस्तक्षेप अनुसंधान के आरंभिक परिणामों का विशेष उल्लेख किया गया। जनवरी 2017 में इस श्रृंखला में आयोजित द्वितीय वार्ता डॉ. बी.बी. रेवाड़ी, डब्ल्यू.एच.ओ. एस.ई.ए.आर.ओ. द्वारा **"एच.आई.वी. का इलाजः मिथक या संभावना?"** थी। इस सत्र में एच.आई.वी. के इलाज में विभिन्न प्रगतियों, प्रसुप्त संक्रमित टी कोशिकाओं एवं एच.आई.वी. के प्रच्छन्न भंडारों, अवशिष्ट प्रतिरूपण, बर्लिन मरीज एवं मिसीसिप्पी शिशु के मामलों और उपचारोपरांत नियंत्रकों, एच.आई.वी. के लिए एक इलाज खोजने में प्रगति एवं बाधाओं का विशेष उल्लेख किया गया।

फरवरी 2017 में **ब्राउन बैग संगोष्ठी** श्रृंखला में डॉ. सुनील एस. सोलोमन, जॉन हॉपकिन्स यूनीवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडीसिन एंड वाई.आर.जी. केयर द्वारा अगली वार्ता में **"उच्च जोखिम आबादियों को शामिल करने की नई विधियाँ और कार्यप्रणालियाँ"** पर फोकस किया। इस वार्ता में एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों का अभिनिर्धारण करने, उन्हें देखभाल के साथ जोड़ने और उनका वायरल संदमन सुनिश्चित करने हेतु मुख्य जनसंख्या और भूस्थानिक आँकड़ों के बीच नेटवर्क संबंधनों का लाभ उठाने के लिए नवप्रवर्तनकारी नई कार्यनीतियों की आवश्यकता का विशेष उल्लेख किय गया। वक्ता ने यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया कि व्यापक क्रियान्वयन साध्य बनाने के लिए इन कार्यनीतियों की लागत कम रहे।

सुश्री विनिता वर्मा, अनुसंधान और मूल्याँकन

मेघालयः लोक प्रदर्शन – रेड रिबन फवार स्टार

24 फरवरी को शिलाँग, पूर्वी खासी पहाड़ियां जिले में मेघालय एड्स नियंत्रण सोसायटी ने त्रेलैंग वेल्फेयर सोसायटी और मल्की स्पोर्ट्स क्लब, शिलाँग के सहयोग से लोक गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया। लोक प्रदर्शन, मिड मीडिया कैम्पेन की गतिविधियों में से एक है।

विजेता – लाल रिबन फवार स्टार 2016–17, शिलाँग, पूर्व खासी पहाड़ियां ज़िला

लाल रिबन फवार स्टार 2016–17 में समूह द्वारा लोक प्रदर्शन

एड्सकॉन–6: "एड्स मुक्त संसार की दिशा में सम्मेलन"

एच.आई.वी./एड्स पर नियंत्रण के संबंध में किए जा रहे प्रयासों का समेकन करने तथा सभी भागीदारों को एक ही मंच पर लाने के लिए, 3 एवं 4 फरवरी 2017 को चंडीगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी (सी.एस.ए.सी.एस.) ने आई.एम.ए. कॉम्प्लैक्स, सैक्टर–35, चंडीगढ़ में दो दिन के सम्मेलन एड्सकॉन 6 – "एड्स मुक्त संसार की ओर" का आयोजन किया। चूँकि इस क्षेत्र में अपरिमित कार्य किया जा चुका है, अतः यह वांछनीय है कि वहाँ एजेंसियों के बीच किसी प्रकार का समन्वय और विचारों, सोच एवं ज्ञान का आदान–प्रदान होना चाहिए। एड्सकॉन ने इसके लिए उपयुक्त मंच मुहैया कराया। इस सम्मेलन का उद्घाटन महामहीम **श्री वी.पी. सिंह बदनौर, पंजाब के राज्यपाल और प्रशासक, केन्द्र शासित क्षेत्र चंडीगढ़** ने किया जहाँ उनके साथ श्री परिमल राय, आई.ए.एस., सलाहकार/प्रशासक, केन्द्र शासित क्षेत्र चंडीगढ, श्री अनुराग अग्रवाल, आई.ए.एस., गृह सचिव एवं स्वास्थ्य सचिव, केन्द्र शासित क्षेत्र चंडीगढ, डॉ. नीरज ढींगड़ा, उप–महानिदेशक (टी.आई.), नाको और डॉ. सुशील गुप्ता, प्रेजीडेंट, आई.एम.ए. भी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में डॉक्टरों, पराचिकित्सा कर्मचारियों, जन स्वास्थ्य विशेषज्ञों और विद्यार्थियों सहित जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से 409 प्रतिनिधि–मंडलों ने भाग लिया। ये प्रतिनिधि–मंडल देश के विभिन्न भागों से आए थे जिनमें केरल, ओडिशा, कोलकाता, मुंबई, लखनऊ, दिल्ली आदि शामिल थे।

महामहीम श्री वी.पी. सिंह बदनौर, पंजाब के राज्यपाल और प्रशासक, केन्द्र शासित क्षेत्र चंडीगढ़ ने अपने भाषण में सूचित किया कि इस सम्मेलन के लिए प्रत्युत्तर हर वर्ष बढ़ रहा है जो वैश्विक संगठनों की विशाल मौजूदगी से स्पष्ट है। उन्होंने इस तरह का सम्मेलन आयोजित करने के लिए चंडीगढ़ एस.ए.सी.एस. द्वारा किए गए प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने बल दिया कि एच.आई.वी. के साथ जीवन बिताने वाले लोगों (पी.एल.एच.आई.वी.) के विरुद्ध भेदभाव को समाप्त किया जाना चाहिए। चंडीगढ़ अपनी कारगर स्वास्थ्य अवसंरचना के साथ 2030 तक एक जन स्वास्थ्य समस्या के रूप में एड्स का उन्मूलन करने वाला प्रथम संघशा. सित क्षेत्र बन सकता है।

डॉ. नीरज ढींगड़ा, उप–महानिदेशक (टी.आई.), नाको ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम का वैश्विक और राष्ट्रीय परिदृश्य प्रस्तुत किया तथा उन्होंने सूचित किया कि एक बार छिपे हुए पी.एल.एच.आई.वी. का उपचार शुरु हो जाने के बाद हर वर्ष अनुमानित 86000 नए संक्रमणों में उल्लेखनीय कमी हो जाएगी। यद्यपि भारत ने इस महामारी को नियंत्रित करने में अत्यधिक अच्छा कार्य किया है तथापि उन्मूलन केवल तभी संभव होगा जब कुछ अतिरिक्त नवप्रवर्तनकारी प्रयास किए जाएं।

नवप्रवर्तनकारी संवाद और अगली पीढ़ी के आई.ई.सी. सत्र में, यह सूचित किया गया कि कैसे विभिन्न नवप्रवर्तनकारी अभियानों के माध्यम स एच.आई.वी./एड्स जागरुकता पैदा करने के लिए नए मीडिया को

महामहीम श्री वी.पी. सिंह बदनौर, पंजाब के राज्यपाल और प्रशासक, संघशासित क्षेत्र चंडीगढ़ प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

इस्तेमाल किया जा रहा है। सम्मेलन में प्रतिभागियों और पैनल चर्चा में समुदाय की अधूरी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रत्युत्तर पर विचार–विमर्श किया गया। श्री कोस्ताब शर्मा, आई.पी.एस., क्षेत्रीय निदेशक, स्वापक नियंत्रण ब्यूरो, चंडीगढ़ की अध्यक्षता में पैनल ने नशीली दवाओं की आपूर्ति, मांग, नुकसान को कम करने के तरीकों को तलाशा। कारागारों में और विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में अंतःशिरा दवा उपयोगकर्ताओं को सेवाएं उपलब्ध कराने की वर्तमान शैली का पुनर्गठन किए जाने की आवश्यकता है।

इन सत्रों में यौन संचारित संक्रमण में आम उपचार समस्याओं, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण परियोजना में अद्यतनीकरण, निदान एवं रोगोपचार, लक्षित हस्तक्षेपों के क्रियान्वयन कार्यनीतियों, नर्वप्रवर्तनकारी संवाद और अगली पीढ़ी के आई.ई.सी., सर्वाधिक जोखिम आबादी के बीच एच.आई.वी. रोकथाम हस्तक्षेपः अच्छी पद्धतियाँ, आई.डी.यू. के बीच हानि न्यूनीकरण सेवाएं – चुनौतियाँ और अवसर, सह–जनगांगी उपदंश और एच.आई.वी. का दोहरा उन्मूलन – नियत लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए तेजी लाने के अर्थोपाय, स्वैच्छिक रक्तदान – संरक्षित रक्त आपूर्ति का आधार, युवा और एच.आई.वी./एड्स तथा मेनस्ट्रीमिंग – सर्वश्रेष्ठ पद्धतियों पर फोकस किया गया। चंडीगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी सभी सेवा प्रदाताओं, नीति निर्माताओं, अनुसंधानकर्ताओं, विद्यार्थियों और लाभार्थियों को एक मंच पर एकजुट करने हेतु यह पहल करने वाली इकलौती सोसायटी है। युवा और पक्षसमर्थन संबंधी समापन सत्र में जनता के प्रत्येक सदस्य के लिए इस परियोजना को अपना मानने की आवश्यकता पर बल दिया गया। सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रस्तुतकर्ता को पुरस्कार दिए गए। जांच और उपचार सेवाएं उपलब्ध कराने वाले सर्वश्रेष्ठ सेवा केन्द्रों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए।

"नवप्रवर्तनकारी संवाद और अगली पीढ़ी" संबंधी सत्र में राष्ट्रीय और राज्य टीम

सुश्री टीनू, चंडीगढ़ एस.ए.सी.एस.

सामाजिक और आचरण परिवर्तन संवाद के संबंध में राज्य स्तरीय प्रशिक्षण

एच.आई.वी.–एड्स नियंत्रण कार्यक्रम में सामाजिक और आचरण परिवर्तन अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फील्ड कार्यकर्ताओं को सामाजिक आचरण परिवर्तन की आवश्यकता से भली–भांति परिचित होने की जरूरत है। लक्षित हस्तक्षेप परियोजनाओं के मास्टर प्रशिक्षकों और तकनीकी सहायता इकाई के कार्यक्रम अधिकारियों के कौशलों को अद्यतन तथा संवर्धन करने के लिए, 21–22 फरवरी 2017 को मध्य प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी (एम.पी.एस.ए.सी.एस.) द्वारा भोपाल में दो दिन की एक सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संवाद (एस.बी.सी.सी.) कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. नरेश गोयल, उप–महानिदेशक, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे और डॉ. के. के. थासू, अपर परियोजना निदेशक, एम.पी.एस.ए.सी.एस. एवं निदेशक स्वास्थ्य सेवाएं, जन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश सरकार ने मंच की साझेदारी की।

डॉ. नरेश गोयल, डी.डी.जी., नाको और डॉ. के.के. थासू, ए.पी.डी., एम.पी.एस.ए.सी.एस. एवं डी.एच.एस., जन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश सरकार एस.बी.सी.सी. कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

राजस्थान में एस.बी.सी.सी. कार्यशाला के दौरान मूक सत्र

15 एवं 16 नवंबर 2016 को मेघालय में एस.बी.सी.सी. कार्यशाला

मध्य प्रदेश के अलावा, 21 एवं 22 नवंबर 2016 को राजस्थान में जयपुर में भी एस.बी.सी.सी. का आयोजन किया गया जिसमें राज्य संसाधन भंडार से अभिनिर्धारित प्रशिक्षकों, टी.आई., सी.एस.टी. और डी.ए.पी.सी.यू. कार्यक्रम अधिकारियों ने भाग लिया। श्री नाहिद मोहम्मद, क्षेत्रीय समन्वयक ने सत्र का संचालन किया और श्री सीता राम यादव, उप–निदेशक मेनस्ट्रीमिंग, आर.एस.ए.सी.एस. ने सत्र का सह–संचालन किया। छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, नागलैंड और गुजरात जैसे राज्यों ने भी राज्य स्तरीय एस.बी.सी.सी. कार्यशालाओं का आयोजन किया।

सुश्री सविता ठाकुर, संयुक्त निदेशक, आई.ई.सी., एम.पी.एस.ए.सी.एस.,
श्री नाहिद मोहम्मद और
सुश्री ललनुनमव्वाई पाशूओ, क्षेत्रीय समन्वयक

श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण और कारखाना विभाग के साथ राज्य स्तरीय बैठक

विभागों में एच.आई.वी./एड्स के संबंध में केन्द्रक व्यक्तियों के नामांकन को अंतिम रूप देने, मौजूदा मानव संसाधन/कल्याण/सी.एस.आर. गतिविधियों में एच.आई.वी./एड्स का एकीकरण करने, एच.आई.वी./एड्स के संबंध में एक ई.एल.एम. कार्य योजना तैयार करने हेतु एक समिति गठित करने, एच.आई.वी./एड्स के संबंध में मास्टर प्रशिक्षकों/हम उम्र शिक्षकों का एक संवर्ग प्राप्त करने और ई.एल.एम. मॉडल का सुदृढ़ीकरण करने हेतु तकनीकी सहायता मांगने के लिए, 10 फरवरी 2017 को परियोजना निदेशक, टी.एस.ए.सी.एस. की अध्यक्षता में श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कारखाना विभाग, केन्द्रीय कामगार शिक्षा बोर्ड (सी.बी.डब्ल्यू.ई.), सी.आई.आई., तेलंगाना राज्य कल्याण बोर्ड, कारखाना निदेशक और टी.आई. प्रवासी गैर–सरकारी संगठनों के साथ एक राज्य स्तरीय बैठक की गई।

कार्रवाई बिंदु

■ कारखाना निदेशक द्वारा राज्य में स्थित उद्योगों की सूची उपलब्ध कराई जाएगी।
■ फील्ड अफसरों का संवेदीकरण किया जाएगा और ये संवेदीकृत फील्ड अफसर ज़िलों के लिए केन्द्रक व्यक्तियों के रूप में कार्य करेंगे जिसमें ई.एल.एम. का सुदृढ़ीकरण करने हेतु टी.आई. प्रवासी एन.जी.ओ. को लिंक किया जाएगा।
■ 100 उद्योगों को वरीयता दी जाएगी।
■ उद्योगों से कार्मिक/प्रशासन/मानव संसधान/कल्याण विभाग के न्यूनतम 2 कर्मचारियों का ई.एल.एम. के संबंध में संवेदीकरण किया जाएगा और टी.एस.यू. एवं टी.आई. प्रवासी एन.जी.ओ. और टी.एस.ए.सी.एस. द्वारा सहायता की जाएगी। कारखाना निदेशक द्वारा उद्योग कर्मचारियों को जुटाया जाएगा।
■ कारखाना विभाग के समन्वय के साथ ई.एस.आई. द्वारा एच.आई.वी./एड्स के संबंध में सक्रिय भूमिका निभाई जाएगी।
■ राज्य श्रमिक कल्याण बोर्ड द्वारा कामगारों हेतु उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की सूची उपलब्ध कराई जाएगी जिसका आगे टी.आई. प्रवासी एन.जी.ओ. के अंतर्गत कामगारों के लिए प्रचार–प्रसार किया जाएगा।
■ ज़िला कलक्टर की अध्यक्षता में ज़िला स्तरीय समितियों को गठन किया जाएगा जिनमें कारखाना निदेशक और ई.एस.आई. भी सदस्य होंगे।

श्री एस. श्रीकर, परामर्शदाता मेनस्ट्रीमिंग, टी.एस.ए.सी.एस.

कारागार निवासियों के लिए एच.आई.वी. जागरुकता परियोजना का लोकार्पण

गुवाहाटीः 1 अप्रैल 2017 को असम में पहली बार गुवाहाटी सेन्ट्रल जेल में एक पायलट परियोजना के रूप में बतौर उच्च जोखिम समूह (एच.आर.जी.) कोटिकृत कैदियों के बीच एड्स जागरुकता और परामर्श सेवा को बढ़ाने के लक्ष्य के साथ एक कारागार हस्तक्षेप परियोजना (पी.आई.पी.) का लोकार्पण किया गया। यह पी.आई.पी. राज्य कारागार विभाग, असम राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी (ए.एस.ए.सी.एस.), राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) और ईमैनुअल अस्पताल एसोसिएशन (ई.एच.ए) के बीच सहयोग का एक भाग है, जो राज्य कारागार विभाग के साथ पी.आई.पी. हेतु क्रियान्वयनकर्ता निकाय के रूप में कार्य कर रहा है। पी.आई.पी. का लक्ष्य राज्य स्तर पर विभिन्न सुस्थापित एच.आ. ई.वी./एड्स हस्तक्षेपों को सेन्ट्रल और ज़िला जेलों में बंद कैदियों के करीब लाना है। ई.एच.ए. के रेबेका का कहना था, "हमें ज्ञात नहीं है कि असम की जेलों में कितने एच.आई.वी.–पॉजीटिव कैदी बंद हैं। हम परियोजना अभी शुरु की है। हम उन्हें परामर्श देंगे और उनका हस्तक्षेप परियोजनाओं के साथ एकीकरण करेंगे।" यह एच.आई.वी.–पॉजीटिव कैदियों को मुफ्त परामर्श और दवाओं तक पहुँच उपलब्ध कराएगी। लोकार्पण के बाद, पी.आई.पी. का असम की सभी जेलों में प्रतिरूपण किया जाएगा। पी.आई.पी. का लक्ष्य जेल में बंद नशीली दवाओं के व्यसनियों को मुखी/ओपॉयड सब्स्टिटूशन थैरेपी (ओ.एस.टी.) उपलब्ध कराना है। पूर्वोत्तर में असम अंतिम राज्य है जहां पी.आई.पी. का लोकार्पण किया गया है। पिछले साल, नागलैंड, मणिपुर, मिजोरम और मेघालय की जेलों में इसका लोकार्पण किया गया था। यह पी.आई.पी. परियोजना प्रोजेक्ट सनशाइन – पूर्वोत्तर में जागरुकता पैदा करने और एड्स–प्रभावित लोगों के लिए हस्तक्षेप परियोजना शुरु करने की पांच वर्षीय पहल का एक भाग है।

प्रोजेक्ट सनशाइन के डिप्टी टीम लीडर, कैलाश दित्य का कहना था, "हम एच.आई.वी.–पॉजीटिव कैदियों को जेल से बाहर अस्पताल नहीं ले जा सकते हैं। पी.आई.पी. के माध्यम से, सचल एकीकृत परामर्श एवं जांच केन्द्र (आई.सी.टी.सी.) को जेल में पहुँचाया जाएगा। जेलों में, यह देखा गया है कि वहाँ एच.आर.जी. व्यक्ति हैं जैसे फीमेल सैक्स वर्कर, अंतःशिरा दवा उपयोगकर्ता और अन्य। पी.आई.पी. का लक्ष्य संवाद को बढ़ाना और सुग्राही लोगों को हस्तक्षेप परियोजनाओं के पास लाना तथा एच.आर.जी. कैदियों का आचरण पैटर्न सही करना होगा।" रोग नियंत्रण एवं रोकथाम हेतु यू.एस.ए. स्थित फेडरल एजेंसी सेन्टर्स प्रोजेक्ट सनशाइन की सहायता कर रहे हैं और इसे फैमिली हेल्थ इंटरनेशनल 360, वैश्विक लाभ–निरपेक्ष विकास संगठन द्वारा क्रियान्वित कर रहा है।
(http://timesofindia.indiatimes.com/)

केरल में सभी राज्य संदर्भ प्रयोगशालाओं के लिए एन.ए.बी.एल. प्रत्यायन

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण परियोजना – चरण IV के अंतर्गत, अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों हेतु लागू सेवाओं की उच्चतम गुणवत्ता उपलब्ध कराने तथा इन प्रयोगशालाओं के अंतिम उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराने के इरादे के साथ गुणवत्ता इस परियोजना का केन्द्रीय विषय है। प्रत्यायन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक प्रामाणिक स्वतंत्र निकाय जैसे कि राष्ट्रीय परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एन.ए.बी.एल.) औपचारिक मान्यता प्रदान करता है कि एक प्रयोगशाला और उसके कार्मिक विनिर्दिष्ट कार्य करने हेतु सक्षम हैं और उन्होंने आई.एस.ओ. 15189:2012 मानदंडों के अनुसार गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली क्रियान्वित की है।

एच.आई.वी. जांच के लिए केरल स्थित पांच राज्य संदर्भ प्रयोगशालाएं अब आई.एस.ओ. 15189:2012 मानदंडों के साथ एन.ए.बी.एल. द्वारा प्रत्यातित हैं। श्रीमती के.के. शैल्जा, शिक्षक, माननीय स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय मंत्री ने संदर्भ प्रयोगशालाओं को सराहना पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने संकेत किया कि यह प्रत्यायन केरल स्वास्थ्यतंत्र की एक महानतम उपलब्धि है जो इन केन्द्रों के माध्यम से निर्गमित एच.आई.वी. और सी.डी.4 जांच रिपोर्टों में अंतर्राष्ट्रीय मानदंड सुनिश्चित करेगी।

राष्ट्रव्यापी त्रिस्तरीय प्रयोगशाला संरचना के अंतर्गत, केरल में 5 राज्य संदर्भ प्रयोगशालाएं (एस.आर.एल.) हैं जो सरकारी चिकित्सा कालेजों – तिरुवनंतपुरम, कोट्टायम, अलेप्पी, थ्रिसूर और कोझिकोडे में स्थित हैं। 2012–13 में आरंभ हुए आई.एस.ओ. 15189:2012 मानदंडों के अनुसार, गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली तैयार एवं क्रियान्वित करना तथा संलग्न सी.डी.4 प्रगणना प्रयोगशालाओं और एकीकृत जांच एवं परामर्श केन्द्रों सहित 5 एस.आर.एल. की समस्त गतिविधियों का प्रत्यायन भी आवश्यक था।

टीम के सदस्य जिन्होंने आई.एस.ओ. : 15189:2013 मानदडों के साथ एन.ए.बी.एल. प्रत्यायन हासिल करने में अंशदान और सहायता की

नाको, केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी और डॉ. राजेश कान्ननगै, राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला के अध्यक्ष, क्रिश्चियन मेडिकल कालेज, वल्लौर, परियोजना कन्सर्न इंटरनेशनल और शेयर इंडिया, जो परियोजना प्रतिभा और परियोजना लक्ष्य के माध्यम से रोग नियंत्रण केन्द्र–भारत के दो लाभ–निरपेक्ष कार्यकारी भागीदार हैं, के संरक्षण की सहायता के साथ और एस.आर.एल. के चिकित्सा अधिकारियों एवं तकनीकी अधिकारियों की दृढ़ प्रतिबद्धता ने इसे सफल बनाया है।

सीनू कदामकपल्लि, ए.डी. (प्रयोगशाला सेवाएं), केरल एस.ए.सी.एस.

समारोह

राष्ट्रीय युवा दिवस

स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 12 जनवरी को वार्षिक रूप से **"राष्ट्रीय युवा दिवस"** मनाया जाता है। 1984 में, भारत सरकार ने 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस घोषित किया था और 1985 से हर वर्ष भारत में इसका समारोह मनाया जाता है।

मुंबई

मुंबई ज़िला एड्स नियंत्रण सोसायटी ने 3 ज़ोनों में एन.एस.एस. सेल, मुंबई विश्वविद्यालय के सहयोग से एच.आई.वी./एड्स विषय पर नाटक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। जी.एन. खालसा कालेज, माटुंगा में राष्ट्रीय युवा दिवस (युवा जगर) – 2017 का आयोजन किया गया जिसमें 250 एन.एस.एस. और आर.आर.सी. सदस्यों ने युवा जगर 2017 समारोह में भाग लिया। जी.एन. खालसा कालेज के प्राचार्य ने खालसा कालेज के उप–प्राचार्य और डॉ. श्रीकला आचार्य, अपर परियोजना निदेशक (एम.डी.ए.सी.एस.) के साथ मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई।

मुंबई में राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय स्तर पर गली नाटक प्रतियोगिता

एन.एस.एस. डी.सी. और एन.एस.एस. पी.ओ. को सम्मानित किया जा रहा है

250 से अधिक आर.आर.सी. सदस्यों के साथ विशेष शपथ ग्रहण की गई

नागलैंड

4 जनवरी से 15 जनवरी तक पतकै क्रिश्चियन कालेज, दीमापुर में आयोजित एक विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर में, जिसमें 29 भारतीय राज्यों और 7 केन्द्र शासित क्षेत्रों से 450 एन.सी.सी. कैडेट आए हुए थे, नागलैंड राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी ने **"अब जिंदगीः हाँ जिंदगी, नहीं एच.आई.वी"** विषय के साथ राष्ट्रीय युवा दिवस का उत्सव मनाया।

इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में बिग्रेडियर निकम, राष्ट्रीय कैडेट कोर, ग्रुप हेडक्वार्टर, कोहिमा, सुश्री मीतिविनुओ सखरी, संयुक्त निदेशक (आई.ई.सी.), एन.एस.ए.सी.एस. श्री ऐनेतो येथो, सहायक निदेशक (युवा कार्य), श्री अलीपोकर, सहायक निदेशक (वी.बी.डी.) और श्रीमती थेजनगुनओ थेनुओ, उपनिदेशक (आई.ई.सी.), एन.एस.ए.सी.एस. शामिल थे।

यह कार्यक्रम एक शपथ पर हस्ताक्षर करने के साथ संपन्न हुआ – "मैं इस संदेश का प्रसार करने हेतु कि एच.आई.वी. और एड्स के लिए रोकथाम ही एकमात्र इलाज है, अपनी पूरी क्षमता एवं प्रभाव के साथ जागरुकता पैदा करने, तथा कलंक एवं भेदभाव का उन्मूलन करने हेतु कार्य करने की शपथ लेता/लेती हूँ।"

नागालैंड में लाल रिबन मानव जंजीर बनाई गई

कैडेटों द्वारा शपथ पर हस्ताक्षर किए गए

मेघालय

मेघालय एड्स नियंत्रण सोसायटी ने शामाकामी, लामजिंगशई परियोजना, शिलाँग के सहयोग से डॉन बोस्को यूथ सेन्टर, लैतुमखाह शिलाँग में "उठो, जागो, लक्ष्य हासिल हो जाने तक मत ठहरो" विषय के अंतर्गत राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में डॉ. (श्रीमती) बी. मावथोह, परियोजना निदेशक मेघालय एड्स नियंत्रण सोसायटी, शिलाँग, बेरी लेसली खारमल्की, एम.एस.एन.पी.+, लालननमावी पाशो, क्षेत्रीय समन्वयक, मेनस्ट्रीमिंग एवं युवा ने भाग लिया। डॉ. जेमिनो मावथोह, सदस्य विधानसभा, नोंगथिम्मै विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र मुख्य अतिथि थे।

रा.यु.दि. समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. जेमिनो मावथोह, सदस्य विधानसभा

एम.एस.एन.पी.+ के श्री बेरी लेसली खारमल्की – एक पी.एल.एच.आई.वी. ने अपना अनुभव बताया

ट्रांसजेंडर समुदाय द्वारा फैशन शो

बीट्स डान्स ग्रुप द्वारा प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश

बी.एस.एन.वी. कालेज, लखनऊ में राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया जिसमें विभिन्न संकायों से विद्यार्थियों ने संगोष्ठी में भाग लिया। वहाँ लगभग 500 प्रतिभागी थे। संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री राकेश कुमार मिश्रा, अपर परियोजना निदेशक, यू.पी.एस.ए.सी.एस., डॉ. अशोक शुक्ला, संयुक्त निदेशक, यू.पी.एस.ए.सी.एस., डॉ. नीना शुक्ला, यू.पी.एस.ए.सी.एस. प्रभारी और डी.के. गुप्ता, प्राचार्य, बी.एस.एन.वी. पी.जी. कालेज एवं परियोजना अधिकारी द्वारा की गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कि नामत् प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, बिना तैयारी के, पोस्टर प्रतियोगिता, नारा प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

उ.प्र. में रा.यु.दि. समारोह के मंच पर गणमान्य व्यक्ति

विद्यार्थियों ने रंगोली प्रतियोगिता में भाग लिया

गोरखपुर, वाराणसी और चित्रकूट, उ.प्र. में आयोजित विभिन्न जिला स्तरीय पदयात्राएं

दिल्ली

डी.एस.ए.सी.एस. ने भी दिल्ली के विभिन्न कालेजों में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। कालेजों के रेड रिबन क्लबों के सहयोग एच.आई.वी./एड्स पर आधारित चित्रकला प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, नारा लेखन प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता और स्वैच्छिक रक्तदान का आयोजन किया गया। इनमें विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

दिल्ली में चित्रकारी प्रतियोगिता, स्वैच्छिक रक्तदान और विजेताओं की सामूहिक तस्वीर की झलकियाँ

राष्ट्रीय टोल फ्री एड्स हेल्पलाइन 1097

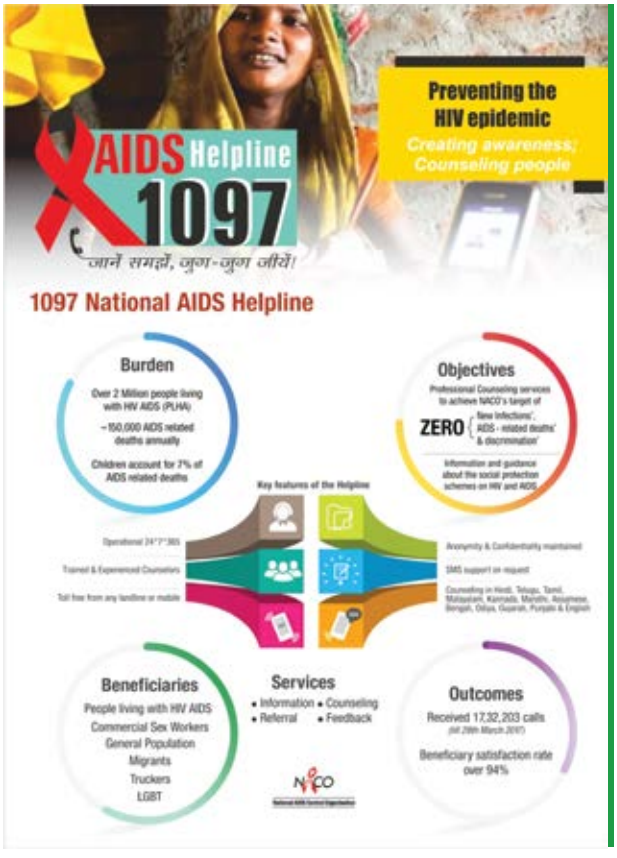

पिछले दिसंबर में 1097 राष्ट्रीय एड्स हेल्पलाइन ने अपनी यात्रा के 2 वर्ष पूरे कर लिए हैं और एच.आई.वी./एड्स के बारे में जागरुकता पैदा करने और परामर्श सेवा सुलभ कराने के लिए इसके द्वारा एक मंच सृजन करना अनवरत जारी है।

हेल्पलाइन पर फोन करने वाले लोगों को शिक्षित करने एवं परामर्श देने के अलावा, यह लोगों की शिकायतों को दर्ज करवाने में भी उनकी मदद कर रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी उन सेवाओं को पाने में बाधित नहीं हो जो उसे मिलनी चाहिए।

डायरेक्टरी सूचना ने भी लोगों को बस हेल्पलाइन से संपर्क करने और आई.सी.टी.सी. एवं ए.आर.टी. स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में समर्थ बनाया है, भले उनकी भाषा कुछ भी हो।

हेल्पलाइन के लिए, जो हिंदी, अंग्रेजी और छह क्षेत्रीय भाषाओं (बंगाली, असमी, तेलुगु, तमिल, मराठी और कन्नड़) के साथ आरंभ (1 दिसंबर 2014) हुई थी, भाषाओं को बढ़ाए जाने और परामर्शदाताओं की संख्या बढ़ाए जाने की मांग देखी गई थी।

अक्टूबर 2016 में, मौजूदा भाषाओं में अतिरिक्त क्षमता के साथ हेल्पलाइन में चार अन्य भाषाओं (मलयालम, ओडिया, गुजराती और पंजाबी) को बढ़ाया गया था और अब यह 12 भाषाओं में कार्य कर रही है।

दिसंबर 2014 से, हेल्पलाइन पर 17 लाख से अधिक टेलीफोन कॉल प्राप्त हो चुकी हैं।

सेवा के अनुसार टेलीफोन कॉल वितरण

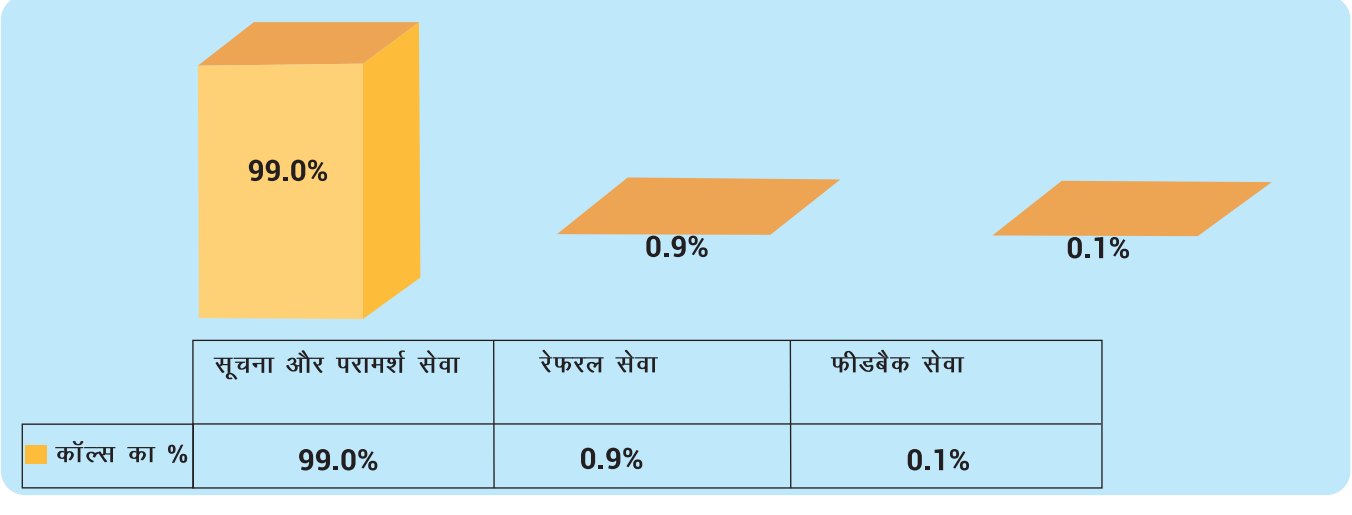

	सूचना और परामर्श सेवा	रेफरल सेवा	फीडबैक सेवा
कॉल्स का %	99.0%	0.9%	0.1%

परिमंडल के अनुसार टेलीफोन कॉल वितरण

	WB	KO	KN	AP	MP	RJ	MH	UN	DL	UE	HR	TN	PB	BR	UW	MU	GJ	AS	OR	KL	NE	HP	JK	CH
% of Calls	17.5	17.0	10.4	9.8	6.0	5.3	4.3	3.4	3.2	2.6	2.6	2.4	2.4	2.3	1.9	1.9	1.8	1.5	1.2	0.9	0.8	0.6	0.3	0.3

भाषा के अनुसार टेलीफोन कॉल वितरण

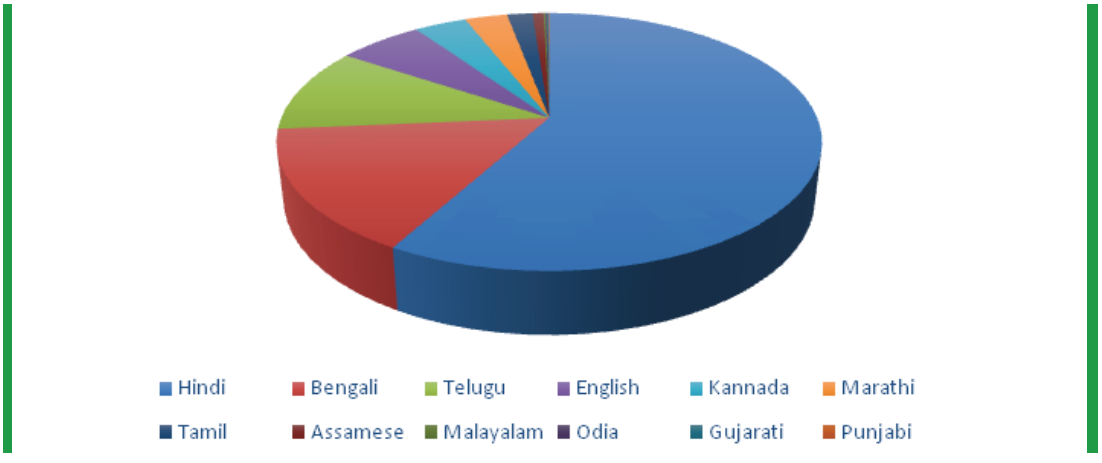

कहानी जिसकी अहमियत है:

नाम: श्री किरण (नाम बदल दिया गया है)
आयु: 35 वर्ष
राज्य: कर्नाटक
जिला: बेंगलुरू

सारकथन:

कर्नाटक के निवासी, 35 वर्ष के श्री किरण ने अपने साथ हुई एक घटना के बारे में मदद मांगने के लिए 1097 पर टेलीफोन किया। किरण ने अपनी कहानी सुनाई और बताया कि उसने एक महिला यौन कामगार के साथ सुरक्षित मैथुन किया था और अपने परिवार एवं भविष्य के बारे में बेहद चिंतित है। उन्हें पता नहीं है कि किससे संपर्क साधा जाए। श्री किरण को अखबार से हेल्पलाइन के बारे में पता चला था और बहुत खुश थे कि वहाँ उनकी मदद करने के लिए कोई मौजूद है।

परामर्शदाता ने धैर्यपूर्वक उनकी बात सुनी और तनाव के उस स्तर को समझा जिससे श्री किरण गुजर रहे थे। उसने उनके अंदर विश्वास पैदा किया और उन्हें जोखिम कारकों और कैसे एच.आई.वी. का संचारण होता है, के बारे में स्पष्ट तरीके से समझाया। परामर्शदाता ने किरण को जानकारी दी कि एच.आई.वी. का संचारण कैसे होता है जिसने श्री किरण की बेचैनी को कम करने में मदद की। अंत में, श्री किरण खुश थे और उन्होंने अपनी जिंदगी में यह गलती नहीं दोहराने का वादा किया।

फीडबैक: "अत्यधिक धन्यवाद, आपकी 1097 हेल्पलाइन द्वारा किए गए अद्भुत कार्य की प्रशंसा करता हूँ।"

इंतखाब आलम
परियोजना अध्यक्ष, 1097 हेल्पलाइन

संरक्षकः डॉ. अरुण के. पांडा, अपर सचिव एवं महानिदेशक, नाको, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

संपादकः डॉ. नरेश गोयल, डी.डी.जी. (एल.एस. एवं आई.ई.सी.)

संपादकीय पैनलः डॉ. नीरज ढींगड़ा, डी.डी.जी. (टी.आई. एवं एम.एंड ई.), डॉ. आर.एस. गुप्ता, डी.डी.जी (सी.एस.टी. एवं बी.टी.एस.), डॉ. के.एस. सचदेवा, डी.डी.जी. (बी.एस.डी., एस.टी.आई. एवं अनुसंधान), डॉ. शोभिनी राजन, ए.डी.जी. (एस.टी.आई. एवं रक्त संरक्षा), डॉ. राजेश राणा, राष्ट्रीय परामर्शदाता (आई.ई.सी. एवं मेनस्ट्रीमिंग), सुश्री नेहा पाण्डेय, परामर्शदाता आई.ई.सी. एवं मेनस्ट्रीमिंग

नाको समाचार राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का सूचना पत्र है।

9वां तल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36, जनपथ, नई दिल्ली – 110001, दूरभाषः 011-23325343, फैक्सः 011-23731746, www.naco.gov.in

संपादन, डिज़ाइन और निर्माणः विजुयल हाउस, ईमेलः tvh@thevisualhouse.in

MOHFW_ India www.mohfw.nic.in www.pmindia.gov.in www.mygov.in www.facebook.com/NACOIndia/

मुफ्त एवं गुप्त एच.आई.वी. परामर्श एवं जांच के लिए नजदीकी सरकारी अस्पताल में एकीकृत परामर्श एवं परीक्षण केन्द्र (आई.सी.टी.सी.) में पधारें

सरकारी अस्पताल में एंटीरेट्रोवायरल थैरेपी सेन्टर में एच.आई.वी. का मुफ्त इलाज उपलब्ध है